



Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर दही-हांडी ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर दही-हांडी ॥

दही-हांडी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से जुड़ी एक लोकप्रिय और उत्साहपूर्ण परंपरा है। भगवान श्रीकृष्ण को बचपन से ही माखन और दही बहुत प्रिय थे। उनकी बाल लीलाओं में वे अपने सखाओं के साथ मिलकर घरों में रखी माखन की मटकियाँ फोड़कर माखन खाया करते थे। इसी बाल लीला की स्मृति में जन्माष्टमी के अवसर पर दही-हांडी उत्सव मनाया जाता है।

दही-हांडी की परंपरा

दही, माखन या अन्य प्रसाद से भरी मटकी को ऊँचाई पर लटकाया जाता है। युवाओं और बच्चों की टोली मानव पिरामिड बनाकर मटकी तक पहुँचने का प्रयास करती है। अंत में कोई एक व्यक्ति ऊपर चढ़कर मटकी फोड़ता है और उसमें रखा प्रसाद सभी में बाँटा जाता है।

दही-हांडी का धार्मिक महत्व

दही-हांडी भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, मित्रता, सहयोग और सामूहिक प्रयास का प्रतीक मानी जाती है। यह उत्सव लोगों को मिल-जुलकर कार्य करने, आनंद बाँटने और भगवान कृष्ण की भक्ति में सहभागी बनने की प्रेरणा देता है।

दही-हांडी से मिलने वाला संदेश

एकता: सभी मिलकर लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

सहयोग: सफलता के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है।

आनंद: उत्सव जीवन में प्रसन्नता और सकारात्मकता लाता है।

भक्ति: यह श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का स्मरण कराता है।

साझेदारी: मटकी का प्रसाद सभी के साथ बाँटने की परंपरा प्रेम और समानता का संदेश देती है।